महामत कहे मेहेबूब की, जेती अर्स सूरत।
सो सब बैठीं कदमों तले, अपनी ए निसबत।। २२९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि परमधाम में जितनी श्री राजजी की अंगना हैं, वह सब उनके चरण कमलों के तले बैठी हैं। यही हमारी निसबत है, हमारा यही अर्श है।

।। प्रकरण ।। २१ ।। चौपाई ।। १४४६ ।।

सिनगार कलस तिन सिनगार बरनन विरहा रस

क्यों बरनों हक सूरत, अब लों कही न किन।
ए झूठी देह क्यों रहे, सुनते एह बरनन।। १ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन कैसे करूं, जो आज तक किसी ने नहीं किया। यह वर्णन सुनकर यह झूठी देह कैसे रह सकती है?

बरनन आसिक कर ना सके, और कोई पोहोंचे न आसिक बिन।
हक जाहेर क्यों होवहीं, देखतहीं उड़े तन।। २ ।।

आशिक रूहें श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन नहीं कर सकतीं और इनके सिवाय वहां कोई पहुंचता नहीं है, तो फिर श्री राजजी महाराज की हकीकत जाहिर कैसे हो, जिन्हें देखते ही यह तन नष्ट हो जाता है।

हक देखे वजूद ना रहे, ज्यों दारू आग से उड़त।
यों वाहेदत देखें दूसरा, पाव पल अंग न टिकत।। ३ ।।

जैसे बारूद का पहाड़ जरा सी आग की चिनगारी से उड़ जाता है, वैसे ही श्री राजजी महाराज को देखकर सांसारिक तन नहीं रह सकते। इस तरह से मोमिनों के अतिरिक्त दूसरा कोई एक क्षण मात्र के लिए भी श्री राजजी महाराज को नहीं देख सकता।

हक इस्क आग जोरावर, इनमें मोमिन बसत।
आग असल जिनों वतनी, यामें आठों जाम॰ अलमस्त।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज के इश्क की आग बड़ी जोरदार है, जिसमें मोमिन रहते हैं। जिन मोमिनों को इश्क की आग लगी है, वह आठों पहर उसी में मग्न रहते हैं।

जो निस दिन रहे आग में, ताए आगै के सब तन।
वाको जलाए कोई ना सके, उछरे आगै के वतन।। ५ ।।

जो रात-दिन इश्क की आग में रहते हैं, उनके तन सभी आग के हो जाते हैं। उनको दूसरा फिर कोई जला नहीं सकता। वह इश्क की आग में ही अपने घर में उछलते-कूदते रहते हैं।

आग जिमी पानी आग का, आग बीज आग अंकूर।
फल फूल बिरिख आग का, आग मजकूर आग सहूर।। ६ ।।

इनके लिए जमीन, पानी, बीज, फल, फूल सब आग के हैं। विचार करके देखो तो सब जगह इश्क का ही रंग है।

Nijanand App

बिरिख मोमिन आग इस्क, और आग इस्क अर्स।
सब पीवें आग इस्क रस, दिल आगै अरस–परस।।७ ।।

मोमिन अर्श के वृक्ष के समान हैं और आग भी परमधाम के इश्क की है। सभी मोमिन इश्क की आग को ही पीते हैं। इस तरह से मोमिनों का दिल और इश्क की आग दोनों अरस-परस (परस्पर) हैं।

घर मोमिन आग इस्क में, हक अगनी के पालेल।
सोई इस्क आग देखावने, ल्याए जो माहें खेल।।८ ।।

मोमिनों का घर परमधाम इश्क की आग का है। इनको श्री राजजी महाराज ने अपने इश्क की अग्नि से ही पाला है। उसी इश्क की आग को दिखाने के वास्ते श्री राजजी महाराज इन्हें खेल में लाए हैं।

जो पैदा हुआ आग का, सो आग में जलत नाहें।
वह वजूद आग इस्क के, रहें हमेसा आग माहें।।९ ।।

जो तन आग में पैदा हुआ है, वह आग में जलता नहीं है। ऐसे इश्क के तन सदा इश्क की आग में रहते हैं।

सोई बात करें हक अर्स की, सहूर या बेसहूर।
हुए सब विध पूरन पकव, हक अर्स दिन जहूर।।१० ।।

मोमिन होश में या बेहोशी में श्री राजजी महाराज या परमधाम की ही बातें करते हैं। इस तरह से मोमिन सब तरह से पक्के हो गए। उन्हें श्री राजजी महाराज और परमधाम की जागृत बुद्धि का ज्ञान है।

जो हक देखे टिक्या रहे, सोई अर्स के तन।
सोई करें मूल मजकूर, सोई करे बरनन।।११ ।।

श्री राजजी महाराज को देखकर जो नष्ट न हों, वही परमधाम के तन हैं। वही खेल की शुरूआत में इश्क रब्द (विवाद) का वर्णन करेंगे।

पर ए देख्या अचरज, जो विरहा सब्द सुनत।
क्यों तन रह्या जीव बिना, हाए हाए ए सुनत न अरवा उड़त।।१२ ।।

एक बड़ी हैरानी वाली बात यह देखो कि विरह का शब्द सुनते ही मोमिनों का तन उड़ जाना चाहिए। फिर भी यह वचन सुनकर भी यह संसार में खड़े हैं। पता नहीं श्री राजजी के बिना इनके तन कैसे खड़े हैं?

आसिक अरवा कहावहीं, तिन मुख विरहा ना निकसत।
जब दिल विरहा जानिया, तब आह अंग चीर चलत।।१३ ।।

जो अर्श के आशिक हैं, उनके मुख से विरह कभी निकलता नहीं है। जब उनके दिल में वियोग की पहचान हो जाती है, तो उनकी रूह के एक ही इश्क की आह में तन छूट जाते हैं।

ए हांसी कराई हुकमें, इस्क दिया उड़ाए।
मुरदा ज्यों इस्क बिना, गावत विरहा लड़ाए।।१४ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने इश्क को छीनकर यह हंसी कराई है। यह मुर्दा तन इश्क के बिना ही विरह के गीत बड़े प्यार से गा रहा है।

Nijanand App

कबूं अर्स रूहें ऐसी ना करें, जैसी हमसे हुई इन बेर।
अर्स रूहों को विरहा रसें, हुए बेसक न लैयां घेर।। १५ ।।

परमधाम की रूहें कभी ऐसा नहीं कर सकतीं जैसे इस बार हमसे हुआ है। परमधाम की रूहों को पहचान हो जाने पर भी वह विरह के रस में मग्न नहीं हुईं।

चरन तली की जो लींकें, सो एक लीक न होए बरनन।
तो मुख से चरन क्यों बरनवूं, जो नूरजमाल का तन।। १६ ।।

चरण कमलों की तली में जो रेखाएं हैं, उनकी एक भी रेखा का वर्णन नहीं हो सकता, तो फिर श्री राजजी महाराज के चरण कमल जो श्री राजजी महाराज के ही अंग हैं, उनका वर्णन इस मुख से कैसे करूं?

इन चरनों विध क्यों कहूं, नाजुक निपट नरम।
ए बरनन करते इन जुबां, हाए हाए उड़त न अंग बेसरम।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों की हकीकत कैसे बताऊं, जो बहुत ही नाजुक और कोमल हैं। इस अंग का यहां की जबान से वर्णन करते हुए यह बेशर्म तन समाप्त क्यों नहीं हो जाता?

चरन केहेती हों मुखथें, जो निरखती थी निस दिन।
सो समया याद न आवहीं, क्यों न लगे कलेजे अगिन।। १८ ।।

मैं अपने मुख से चरण कमलों की शोभा कहती हूं, जिसे रात-दिन देखा करती थी। अब वह समय याद क्यों नहीं आता और कलेजे में चोट क्यों नहीं लगती?

चरन अंगूठे चित्त दे, नैनों नखन देखती जोत।
नजरों निमख न छोड़ती, हाए हाए सो अब लोहू भी ना रोत।। १९ ।।

चरणों के अंगूठे के नखों की जोत को मैं नैनों से बड़े प्यार से देखा करती थी और एक पल के लिए भी कभी नजर से अलग नहीं रहती थी। हाय! हाय! अब मेरी ऐसी हालत हो गई कि मेरी आंखों से खून के आंसू क्यों नहीं निकलते?

नैनों अंगुरियां देखती, कोमलता हाथ लगाए।
सो मेरे नैन नाम धराए के, हाए हाए जल बल क्यों न जाए।। २० ।।

मैं अपने नैनों से श्री राजजी महाराज के चरणों की उंगलियों की कोमलता हाथ लगा लगाकर देखती थी। अब यही मेरे नैन मेरी बदनामी करा रहे हैं। हाय! हाय! यह नैन जल बल कर नष्ट क्यों नहीं होते?

चरन तली रेखा देखती, मेरी आंखों नीके कर।
ए कटाव किनार पर कांगरी, हाए हाए नैना जले न नाम धर।। २१ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों की तली की रेखाओं को मेरी आंखें अच्छी तरह से देखा करती थीं। अब जिन चरणों के किनारे पर रेखाओं में कटाव और कांगरी बनी है, हाय! हाय! वही देखकर भी यह हमारे नैन जल क्यों नहीं जाते? क्यों बदनामी कराते हैं?

रंग लाल कहूं के उज्जल, के देख खूबियां होत खुसाल।
सो देखन वाले नाम धराए के, हाए हाए ओ जले न माहें क्यों झाल।। २२ ।।

चरण कमल का रंग लाल कहूं कि उज्ज्वल कहूं? इनकी खूबी देखकर बहुत खुशी होती है। ऐसे इन चरणों को देखने वाले मोमिन क्यों अपने नाम की बदनामी कराते हैं? जलकर खाक क्यों नहीं हो जाते?

Nijanand App

नाजुक सलूकी मीठी लगे, नैना देखत ना तृपिताएं।
हाए हाए ए अनुभव दिल क्यों भूलै, ए हुकमें भी क्यों पकराए।। २३ ।।

इन चरणों की नजाकत और सलूकी बड़ी अच्छी लगती है, जिसे देखकर नेत्र तृप्त क्यों नहीं होते? हाय! हाय! हम अपने घर की बातें क्यों भूल गए? श्री राजजी महाराज ने हमें हुकम के अधीन क्यों कर दिया?

नाम जो लेते विरह को, मेरी रसना गई ना टूट।
सो विरहा नैनों देख के, हाए हाए गैयां न आंखां फूट।। २४ ।।

हम श्री राजजी से बिछुड़ गये हैं। ऐसी बात कहते समय मेरी जबान टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गई? अब आंखों से देख भी रहे हैं कि हम बिछुड़ गए हैं। हाय! हाय! फिर भी मेरी आंखें क्यों नहीं फूट गईं?

हक बानी कानों सुनती, कानों सुन के करती मैं बात।
सो अवसर हिरदे याद कर, हाए हाए नूर कानों का उड़ न जात।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज के वचन मैं अपने कानों से सुनती थी और फिर सुनने के बाद उनसे बातें करती थी। उस समय को याद करके हाय! हाय! यहीं कानों का नूर समाप्त क्यों नहीं हो जाता?

क्यों कहूं चरन के भूखन, अर्स जड़ सबे चेतन।
सोभा सुन्दर सब दिल चाही, बोल बोए नरम रोसन।। २६ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण के आभूषणों को कैसे कहें? परमधाम में सब जड़ भी चेतन हैं और दिल के चाहे अनुसार सभी सुन्दर लगते हैं। बोली और नरमाई तथा सुगन्धि अच्छी लगती है।

क्या वस्तर क्या भूखन, असल अंग के नूर।
हाए हाए रूह मेरी क्यों रही, करते एह मजकूर।। २७ ।।

वस्त्र या आभूषण सभी श्री राजजी के अंग की शोभा हैं, जिनका वर्णन करते समय हाय! हाय! मेरी रूह क्यों यहां संसार में रह गई?

रंग रेसम हेम जवेर, ना तेज जोत सब्द लगत।
एही अचरज अरवाहें अर्स की, ए सुनते क्यों ना उड़त।। २८ ।।

परमधाम के नग, रेशम, सोना, जवेर के तेज व जोत का वर्णन करने के लिए यहां शब्द ही नहीं हैं। एक बड़ी हैरानी वाली बात है कि यह सब सुन करके भी परमधाम की रूहें फना क्यों नहीं हो जातीं?

याही भांत इजार की, भांत भूखन की सब।
रूप करें कई दिल चाहे, जैसा रूह चाहे जब।। २९ ।।

इसी तरह से इजार के भराव और चरणों के आभूषणों की हकीकत है। जब जैसी शोभा रूहें चाहती हैं, तब वैसे ही उनके रूप बदल जाते हैं।

इजार बंध याही रस का, भांत भांत झलकत।
देख लटकते फुंदन, हाए हाए अरवा क्यों न कढ़त।। ३० ।।

इजारबन्ध भी इसी तरीके का झलक रहा है, जिसके लटकते हुए फुंदड़े को देखकर रूहें फना क्यों नहीं हो जातीं?

Nijanand App

चरन से कमर लग, भूखन या वस्तर।
हेम जवेर या रेसम, सब एकै रस बराबर।। ३१ ।।

चरण कमलों से लेकर कमर तक आभूषण हों या वस्त्र, सोना, जवेर हो या रेशम, सब एक रस और बराबरी की शोभा रखते हैं।

दिल चाही नरम सोभित, दिल चाही जोत खुसबोए।
जिन खिन जैसा दिल चाहे, सब विध दें सुख सोए।। ३२ ।।

यह सब दिल के चाहे अनुसार नर्म हो जाते हैं तथा इनकी जोत और सुगन्धि जिस क्षण जैसा दिल चाहता है, वैसा ही बन जाती हैं, फिर यह सब तरह के सुख देते हैं।

कई रंग हैं इजार में, उठत जामें में झांईं।
अरवा क्यों सखत हुई, दिल देख उड़त क्यों नाहीं।। ३३ ।।

इजार में कई रंग हैं, जिसकी झलक जामे में दिखाई देती है। मेरी अरवाह (रूह) इतनी सख्त क्यों हो गई? यह दिल के चाहे अनुसार शोभा को देखकर भी फना क्यों नहीं हो जाती?

आसमान जिमी के बीच में, भरी जोत उठें कई रंग।
घट बढ़ काहूं है नहीं, करें दिल चाही कई जंग।। ३४ ।।

आसमान जमीन के बीच नग और जवेर सभी की कई रंग की किरणें उठती हैं, जो एक दूसरी से न कम हैं न ज्यादा हैं, बल्कि दिल में चाहे अनुसार ही इनकी किरणें आपस में टकराती हैं।

ए सब विध दिल देखत, करे जुबां अकल बरनन।
तो भी अरवा ना उड़ी, कोई सखत अंतस्करन।। ३५ ।।

श्री राजजी महाराज के सिनगार की यह सब शोभा दिल में दिखाई देती है, जिसका वर्णन यहां की जबान और बुद्धि करती है। फिर भी हमारी रूह फना क्यों नहीं हो जाती? यह दिल इतना सख्त कैसे हो गया?

दिल सखत बिना इन सरूप की, इत लज्जत लई न जाए।
ए हुकम करत सब हिकमतें, हक इत ए सुख दिया चाहें।। ३६ ।।

दिल सख्त किए बगैर श्री राजजी महाराज के स्वरूप की लज्जत भी तो यहां नहीं मिल सकती। यह सब काम श्री राजजी महाराज का हुकम बड़ी हिकमत से करता है, क्योंकि श्री राजी महाराज मोमिनों को संसार में सुख देना चाहते हैं।

ए रूह के नैनों देखिए, नाजुक कमर निपट।
अति देखी सुन्दर चढ़ती, कही जाए न सोभा कटि।। ३७ ।।

रूह की नजर से देखें तो श्री राजजी महाराज की नजर बहुत ही नर्म है, जिसकी शोभा दूसरे अंगों से चढ़ती दिखाई देती है, इसलिए कमर की शोभा कही नहीं जा सकती।

कटि कमर सलूकी देख के, नैना क्यों रहे अंग को लाग।
ए बातें दिल से विचारते, हाए हाए लगी न दिल को आग।। ३८ ।।

कमर की सलूकी को देखकर मेरी यह आंखें संसार के तन में क्यों खड़ी हैं? इस बात को दिल में विचार करने से हाय! हाय! दिल को आग क्यों नहीं लग जाती?

Nijanand App

ए गौर रंग लाल उज्जल, छाती कई विध देत तरंग।
नाहीं निमूना जोत जवेर, जो दीजे अर्स के नंग।। ३९ ।।

श्री राजजी महाराज की छाती गोरी लाल रंग की उज्ज्वल है, जिससे कई तरह की तरंगें उठती हैं। जवेरों की जोत का नमूना संसार में है ही नहीं, जिसकी तुलना परमधाम के नग से की जा सके।

हैड़ा हक का देख कर, मेरा जीव रह्या अंग माहें।
हाए हाए मुरदा दिल मेरा क्यों हुआ, ए देख चलया नाहें।। ४० ।।

श्री राजजी महाराज के हृदय को देखकर मेरा जीव अंग में ही अटक कर रह गया। हाय! हाय! यह मेरा दिल इतना मुर्दा क्यों हो गया, जो ऐसी शोभा को देखकर फना नहीं हुआ?

हक हैड़ा देखकर, मेरे हैड़े रेहेत क्यों दम।
मांग्या सुख इत देवे को, सो राखत मासूक हुकम।। ४१ ।।

श्री राजजी महाराज के हृदय को देखकर मेरे तन में सांस क्यों अटक रहा है? हमने श्री राजजी महाराज से परमधाम में संसार के सुख की मांग की थी और इसलिए श्री राजजी महाराज का हुकम हमें जिन्दा रखे है।

हाथ पांउं मेरे क्यों रहे, देख हक हाथ पांउं।
हाए हाए ए जुलम क्यों सह्या, क्यों भूले अवसर दाउ।। ४२ ।।

श्री राजजी महाराज के हाथ-पांव को देखकर मेरे हाथ-पांव कैसे खड़े हैं? हाय! हाय! ऐसे जुल्म को हमने कैसे सहन कर लिया? अवसर को हाथ से क्यों जाने दिया?

चकलाई दोऊ खभन की, अंग उतरता सलूक।
देख कमर कटि पतली, हाए हाए दिल होत ना टूक टूक।। ४३ ।।

श्री राजजी महाराज के दोनों बाजुओं की शोभा तथा बाजू से कलाई तक उतरती हुई सलूकी और पतली कमर को देखकर हाय! हाय! मेरे दिल के टुकड़े क्यों नहीं हो जाते?

मैं देख्या अंग जामे बिना, नाजुक जोत नरम।
ए केहेनी में न आवहीं, ए अंग होएं न मांस चरम।। ४४ ।।

मैंने श्री राजजी महाराज के अंग को बिना वस्त्रों के भी देखा है, जो बहुत ही नाजुक और नर्म है। उसका वर्णन किया नहीं जा सकता, क्योंकि श्री राजजी महाराज का अंग मांस और चमड़े से नहीं बना है।

जामे दावन बांहें चोली, सिंध सागर रल्या मानो खीर।
जोत भरी जिमी आसमान, मानो चलसी ऊपर चीर।। ४५ ।।

जामे का घेरा, बाहें तथा चोली ऐसे मिले हैं, जिनकी शोभा दूध (खीर) के सागर के समान दिखाई पड़ती है, जिनकी किरणें जमीन और आसमान में भरी हैं। लगता है यह जोत अभी और ऊपर जाएगी।

चीन मोहोरी बगल या बीच, गिरवान कोतकी नकस।
सब जामा जानों के भूखन, ठौर एक दूजे पे सरस।। ४६ ।।

बगल की बीच की या मोहरी की चुन्नटें तथा जामे पर भरत की नक्शकारी जामे के यह सभी आभूषण एक दूसरे से अच्छे लगते हैं।

Nijanand App

जब जैसा दिल चाहत, तिन खिन तैसा देखत।
वस्तर भूखन हक अंग के, केहेनी में न आवत।।४७।।

जिस समय दिल जैसा देखना चाहता है, उसी क्षण उसे वही शोभा दिखाई देने लगती है, इसलिए श्री राजजी महाराज के वस्त्र आभूषणों की शोभा कही नहीं जा सकती।

ए वस्तर भूखन भांत और हैं, अर्स अंग का नूर।
जो सोभा देत इन अंग को, सो क्यों आवे माहें सहूर।।४८।।

वस्त्र और आभूषण एक और तरह के हैं, जो श्री राजजी महाराज के अंग के नूर की ही शोभा हैं। जिससे श्री राजजी महाराज के स्वरूप की शोभा होती है, उनका वर्णन कैसे करें?

और क्या चीज ऐसी अर्स में, जो सोभा देवे सरूप को।
हक सरभर कछू न आवहीं, रूह देखे विचार दिल मों।।४९।।

परमधाम में ऐसी और कौन सी चीज है जो श्री राजजी महाराज के स्वरूप की शोभा देती है। हे मेरी रूह! दिल से विचार करके देख। श्री राजजी महाराज के अंग की शोभा के समान और कुछ भी नहीं है।

ए निपट बात बारीक है, अर्स रूहें करना विचार।
और कोई होवे तो करे, बात अलेखे अपार।।५०।।

यह बात बड़ी खास है (बारीक है) जिसे परमधाम की रूहों! तुम विचार करना। यह शोभा बेशुमार है। यदि कोई दूसरा हो तो वर्णन करें।

सोभा हक के अंग की, सो अंग ही की सोभा अंग।
ऐसी चीज कोई है नहीं, जो सोभे इन अंग संग।।५१।।

श्री राजजी महाराज के अंग के सिनगार उनके अंग की ही शोभा हैं। परमधाम में ऐसी कोई चीज नहीं है, जो श्री राजजी महाराज के अंग के समान शोभा देने वाली हो।

कहूं पटुके की सलूकी, के ए भूखन कहूं कमर।
ए छब फब दिल देख के, न जानों रूह रेहेत क्यों कर।।५२।।

पटुके की बनावट कहूं या आभूषणों का वर्णन करूं या फिर कमर की छवि और सुन्दरता को दिल से देखूं, फिर भी यह सब देखकर पता नहीं, मेरी रूह क्यों खड़ी है? फना क्यों नहीं हो गई?

ए कहे जांए न वस्तर भूखन, ए चीज दुनियां के।
जो सोभा देत हक अंग को, ताए क्यों नाम धरिए ए।।५३।।

वस्त्र और आभूषण दुनियां की चीजें कही जाती हैं। वस्त्र-आभूषण जो परमधाम में हैं, वह श्री राजजी के अंग की ही शोभा है, इसलिए इनके नाम वस्त्र, आभूषण अलग से क्यों कहें?

हक के अंग का नूर जो, ए रूहों अर्स में सुध होत।
इत सब्द न कोई पोहोंचहीं, जो कोट रोसन कहूं जोत।।५४।।

यह श्री राजजी महाराज के अंग की शोभा है, जिसकी जानकारी परमधाम में रूहों को होती है। यदि करोड़ों की संख्या से इनकी जोत का वर्णन करूं, तो भी यहां के शब्द शोभा में नहीं पहुंचते।

Nijanand App

नख अंगुरीयां अंगूठे, कोई दिया न निमूना जाए।
जोत क्यों कहूं इन मुख, रहे अंबर जिमी भराए।।५५।।

अंगूठे और उंगलियों के नाखूनों का संसार में कोई नमूना नहीं है। इनकी जोत जमीन और आसमान में फैली है। उसे संसार के मुख से कैसे बताएं?

पतली अंगुरियां उज्जल, सोभा क्यों कहूं मुंदरियों मुख।
ए देखे रूह मोमिन, सोई जानें ए सुख।।५६।।

हाथ की उंगलियां बड़ी पतली और उज्ज्वल हैं। उनकी मुंदरियों की शोभा यहां के मुख से कैसे बताएं? जो मोमिन (रूह) देखते हैं, इस सुख को वही जानते हैं।

लीकें हथेली उज्जल, सलूकी पोहोंचों ऊपर।
ए बेवरा केहेते अकल, हाए हाए अरवा रेहेत क्यों कर।।५७।।

हाथ की रेखाएं बड़ी उज्ज्वल हैं और पंजे के ऊपर की पोहोंचे की बनावट बड़ी सुन्दर है। संसार की अक्ल से इसका विवरण करते हुए हाय! हाय! यह अरवाह (रूह) फना क्यों नहीं हो जाती?

पोहोंची काड़ों कड़े झलकत, हेम जवेर कई रंग रस।
दिल चाह्या रूप रंग ल्यावहीं, जो देखिए सोई सरस।।५८।।

कलाई में पोहोंची और कड़े झलक रहे हैं, जिनमें सोने और जवेर के कई रंग हैं। जो दिल चाहे अनुसार रूप बदलते रहते हैं तथा जिसे भी देखें, अच्छा लगता है।

मोहोरी चूड़ी बांहें बाजू बंध, सोभा बारीक कई बरनन।
नाम लेत इन चीज का, हाए हाए अरवा उड़त ना मोमिन।।५९।।

बाहों की मोहरी पर चुन्नटें हैं। भुजाओं पर चुन्नटे हैं, जिनमें कई तरह की बारीक शोभा है। इनके अन्दर की चीजों का नाम लेकर हाय! हाय! मोमिनों की अरवाह क्यों नहीं उड़ जाती?

हक हुकम राखत जोरावरी, बात आई ऊपर हुकम।
ना तो रहे ना सुन वचन, पर ज्यों जानें त्यों करें खसम।।६०।।

विचार करके देखा तो पता चला कि श्री राजजी महाराज के हुकम से ही यह तन खड़ा है, इसलिए सभी बातें हुकम पर आ जाती हैं। वरना स्वरूप के ऐसे शब्दों को सुनकर रूह खड़ी नहीं रह सकती, परन्तु जैसा धनी चाहते हैं, वैसा वह कर रहे हैं।

सोभा लेत हैड़े खभे, कर हेत सुनत श्रवन।
विचार किए जीवरा उड़े, या उड़े देख भूखन।।६१।।

श्री राजजी महाराज की छाती और बाजू बहुत शोभा देते हैं। श्री राजजी महाराज बड़े प्यार से अपने कानों से रूहों की बातें सुनते हैं। इनके सिनगार के आभूषण को देखकर विचार करें, तो यह जीव उड़ जाए।

गौर हरवटी अति सुन्दर, या देख के लांक सलूक।
लाल अधुर देख ना गया, लोहू मेरे अंग का सूक।।६२।।

हरवटी गोरी है, बहुत सुन्दर है, फिर उसके ऊपर की गहराई को देखती हूं जो बहुत सुन्दर है। उसके ऊपर लाल होंठों को देखकर मेरे अंग का खून क्यों नहीं सूख गया?

Nijanand App

मुख चौक छबि सलूकियां, सुन्दर अति सरूप।
गाल लाल अति उज्जल, सुखदायक सोभा अनूप।। ६३ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की छवि और सलूकी देखती हूं तो वह बहुत ही सुन्दर दिखाई देती हैं। गाल लाल और अति उज्ज्वल हैं और बेशुमार शोभा के सुख को देने वाले हैं।

निलवट तिलक नासिका, रंग पल में अनेक देखाए।
दंत बीड़ी मुख मोरत, हाए हाए जीवरा उड़ न जाए।। ६४ ।।

नासिका से लेकर माथे तक तिलक लगा है। जिसके रंग एक क्षण में कई दिखाई देते हैं। श्री राजजी महाराज दांतों से पानों का बीड़ा चबाते हैं। उसे देखकर हाय! हाय! यह जीव क्यों नहीं उड़ जाता?

रंग नासिका की मैं क्यों कहूं, गुन सलूक अदभूत।
सुन्य ब्रह्मांड को फोड़ के, अर्स बास लेत बीच नासूत।। ६५ ।।

श्री राजजी महाराज की नासिका का रंग तथा सलूकी अद्‌भुत है। मेरी आत्मा इस क्षर ब्रह्माण्ड को पारकर परमधाम की सुगन्धि के सुख को इस मृत्युलोक में लेती है।

नैन सैन जो करत हैं, सामी रूह मोमिन।
ए सैना दिल लेय के, हाए हाए चिराए न गया ए तन।। ६६ ।।

श्री राजजी महाराज रूहों के सामने जब नैनों से इशारों से बात करते हैं, तो इन इशारों को दिल में लेकर हाय! हाय! यह तन क्यों नहीं फट गया?

ए नैना नूरजमाल के, देख सलोंने सलूक।
ए सुन नैन बिछोड़ा मोमिन, हाए हाए हो न गए भूक भूक।। ६७ ।।

श्री राजजी महाराज के नैन रसीले और मनमोहक हैं। ऐसे नैनों का वियोग सुनकर हाय! हाय! मोमिनों के टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गए?

अंबर धरा के बीच में, केस लवने नूर झलकत।
ए सोभा मुख क्यों कहूं, कानों मोती लाल लटकत।। ६८ ।।

आसमान और जमीन के बीच में बालों की तथा गालों की शोभा झलकती है। कानों में मोती और लाल लटकते हैं। इस शोभा को यहां के मुख से कैसे बताऊं?

कानन मोती केहेत हों, पल में बदलत भूखन।
आसिक देखे कई भांतों, सुख देवें दिल रोसन।। ६९ ।।

कानों की शोभा में मैंने मोती का नाम लिया है, परन्तु कानों के आभूषण क्षण-क्षण में बदलते हैं, जिन्हें आशिक रूहें अपने दिल के चाहे अनुसार कई भांति की शोभा देखती हैं और अपने दिल को सुख देती हैं।

कानों कड़ी गठौरी–मुरकी, जुगत जिनस नहीं पार।
नाम नंग रंग रसायन क्यों कहूं, रूप खिन में बदलें बेसुमार।। ७० ।।

कानों में बाली और गठी हुई मुरकी (बाली) की जुगती बेशुमार है। उसके नाम, रंग, नग और रसायन का कैसे वर्णन करू, जिसके रूप एक क्षण में बेशुमार बदल जाते हैं।

Nijanand App

उज्जल निलाट लाल तिलक, क्यों कहूं सोभा असल।
सुन्दर सलूकी सरूप की, माहें आवत ना अकल।।७१ ।।

श्री राजजी महाराज के उज्ज्वल माथे पर लाल टीका शोभा देता है। तिलक की सलूकी से स्वरूप की सुन्दरता और बढ़ जाती है। असल शोभा का वर्णन करना यहां की अक्ल से सम्भव नहीं होता।

पाग कही सिर हक के, और कह्या सिर मुकट।
हाए हाए जीवरा क्यों रह्या, खुलते हिरदे ए पट।।७२ ।।

श्री राजजी महाराज के शीश कमल पर पाग और मुकुट बताया है। हाय! हाय! इसकी पहचान होने पर भी जीव फना क्यों नहीं हो गया?

कलंगी दुगदुगी तो कहूं, जो पगरी होए और रस।
वस्तर भूखन या अंग तीनों, हर एक पे एक सरस।।७३ ।।

पाग के ऊपर की कलंगी और दुगदुगी का वर्णन तब करें जब यह पगड़ी से अलग हों। श्री राजजी महाराज के वस्त्र, आभूषण और अंग तीनों एक से ही इकट्ठे लगते हैं।

ताथें रस तो सब एक है, तामें अनेक रंग।
कलंगी दुगदुगी ठौर अपने, करत माहों माहें जंग।।७४ ।।

इसलिए यह सभी अंग, वस्त्र, आभूषण एक रस हैं, जिनमें अनेक तरह के रंग हैं। कलंगी और दुगदुगी के नगों की किरणें आपस में टकराती हैं।

मोमिन असल सूरत अर्स में, अबलों न जाहेर कित।
खोज खोज कई बुजरक गए, सो अर्स रूहें ल्याई हकीकत।।७५ ।।

मोमिनों के असल तन परमधाम में हैं, जो आज दिन तक किसी को पता नहीं था। बड़े-बड़े लोगों ने यहां खोजा, परन्तु परमधाम की जानकारी रूहों के आने पर ही संसार में जाहिर हुई।

नूर खूबी कही केसन की, हक सरूप की इत।
हाए हाए मेरा अंग मुरदा ना हुआ, केहेते बका निसबत।।७६ ।।

श्री राजजी महाराज के नूरी बालों की खूबी का वर्णन किया। अपने धनी की अंगना होने की पहचान होने पर भी हाय! हाय! मेरा यह तन टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गया?

नख सिख लों बरनन किया, और गाया लड़ाए लड़ाए।
मोमिन चाहिए विरहा सुनते, तबहीं अरवा उड़ जाए।।७७ ।।

श्री राजजी महाराज के सिनगार का नख से शिख तक वर्णन किया और बड़े प्यार से मोमिनों को समझाया। अब मोमिनों को इस जुदाई की बात सुनकर तुरन्त ही तन त्याग देना चाहिए।

जो परआतम पोहोंचे नहीं, सो क्यों पोहोंचे हक अंग को।
आसिक और मासूक, कैसी तफावत इनमों।।७८ ।।

जब संसार की उपमा हमारी परआतम (मूल तन) को नहीं लगती, तब श्री राजजी महाराज के अंग का वर्णन कैसे करें? आशिक रूहें माशूक श्री राजजी महाराज में यह कैसा फर्क हो गया?

Nijanand App

नाजुक सोभा हक की, जो रूह के आवे नजर।
तो अबहीं तोको अर्स की, होए जाए फजर।।७९ ।।

श्री राजजी महाराज की यह नजाकत यदि रूह को दिख जाए, तो मोमिनों से तुरन्त संसार छूट जाए और परमधाम दिखने लगे।

ज्यों सूरत दिल देखत, त्यों रूह जो देखे सूरत।
बेर नहीं रूह लज्जत, तेरे अंग जात निसबत।।८० ।।

रूहों के दिल श्री राजजी महाराज के स्वरूप को देखते हैं। वह यदि संसार में बैठकर श्री राजजी महाराज के स्वरूप का दर्शन कर लें तो अखण्ड लज्जत पाने में एक क्षण नहीं लगेगा, क्योंकि उनके मूल तन श्री राजजी महाराज की अंगना हैं।

फरक नहीं दिल रूह के, ए तो दोऊ रहे हिल मिल।
अर्स में जो रूह है, तो हकें कह्या अर्स दिल।।८१ ।।

रूह की परआतम के दिल और श्री राजजी महाराज के दिल में कोई अन्तर नहीं है। यह दोनों हिले मिले हैं, इसलिए परमधाम में जिनकी परआतम है, उनके दिल में संसार में श्री राजजी महाराज आकर बैठे हैं।

तेरा दिल लग्या ज्यों सूरत को, त्यों जो सूरतें रूह लगे।
तो अबहीं ले रूह लज्जत, एक पलक में जगे।।८२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरी आत्मा! परमधाम में श्री राजजी महाराज के स्वरूप को देखती है। वैसे ही खेल में यदि तुमारी सुरता उस परआतम से श्री राजजी महाराज के स्वरूप को देखने लगे तो रूह को तुरन्त आराम मिलेगा और एक पल में जाग जाएगी।

रूह तो तेरी दिल बीच में, तो कह्या दिल अर्स।
सेहेरग से नजीक तो कह्या, जो रूह दिल अरस-परस।।८३ ।।

हे मेरी रूह! तेरी परआतम श्री राजजी के दिल में परमधाम में है, इसलिए संसार में भी श्री राजजी महाराज ने तेरे दिल को अर्श किया है, इसलिए श्री राजजी महाराज हमसे सेहेरग से नजदीक हैं, क्योंकि रूह का दिल और श्री राजजी का दिल यहां और परमधाम में एकाकार है।

सूरत केहेते हक की, आगूं रूह मोमिन।
हाए हाए रूह मुरग ना उड़या, बरनन करते अर्स तन।।८४ ।।

श्री राजजी महाराज के ऐसे स्वरूप का जो परमधाम में अखण्ड है, मोमिनों के आगे वर्णन करते समय हाय! हाय! मेरी रूह! तेरा यह तन मिट क्यों नहीं जाता?

आगूं अरवाहें अर्स की, करी बातें हक जुबान।
हाए हाए तन मेरा क्यों रह्या, करते खिलवत बयान।।८५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि परमधाम के मोमिनों के सामने यहां की जबान से श्री राजजी महाराज की तथा मूल-मिलावा की बातें बताई हैं। हाय! हाय! यह वर्णन करते समय मेरा तन क्यों खड़ा रहा?

Nijanand App

रूहें रहें अर्स दरगाह में, जो दरगाह नूर-जमाल।
ए किया बयान खिलवत का, हाए हाए रूह रही किन हाल।। ८६ ।।

रूहें परमधाम में श्री राजजी महाराज के चरणों तले मूल-मिलावा में बैठी हैं। फिर मैंने मूल-मिलावा की जब हकीकत बताई, तो उसे सुनकर रूहों की रहनी क्यों नहीं बदली?

फेर फेर मेहेबूब देखिए, लगे मीठड़ा मुख मासूक।
अंग गौर जोत अंबर लों, छब देख दिल होत न भूक भूक।। ८७ ।।

बार-बार अपने महबूब श्री राजजी को देखते हैं तो माशूक श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द बड़ा लुभावना लगता है। उनके गोरे रंग की जोत आकाश तक फैली है। इस शोभा को देखकर भी दिल टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं होता?

रूप रंग अंग छबि सलूकी, कहे वस्तर भूखन।
ए केहेते अरवा ना उड़ी, हाए हाए कैसी हुज्जत मोमिन।। ८८ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग के रूप को, रंग को और सलूकी तथा वस्त्र, आभूषण जो मैंने बताए हैं, की शोभा बताते समय हाय! हाय! मेरी रूह उड़ क्यों नहीं गई? हाय! हाय! हम कैसी रूहें हैं जो श्री राजजी महाराज की अंगना कहलाती हैं?

पांउं लीक केहेते अरवा उड़े, क्यों बरनवी हक सूरत।
बंध बंध छूट ना गए, हाए हाए कैसी अर्स हुज्जत।। ८९ ।।

चरण कमलों की तली की रेखाएं वर्णन करते समय ही अरवाह उड़ जानी चाहिए। पता नहीं फिर कैसे मैंने श्री राजजी के स्वरूप का वर्णन कर दिया। ऐसा वर्णन करते समय मेरे शरीर के जोड़-जोड़ क्यों नहीं खुल गए? हाय! हाय! हमारी अंगना होने का यह कैसा दावा है?

कह्या गौर मुख मासूक का, और निलवट असल तिलक।
हाए हाए ए बयान करते क्यों जिए, हम में रही नहीं रंचक।। ९० ।।

श्री राजजी महाराज के मुख का रंग मैंने गोरा बताया है और यह भी कहा है कि उनके माथे पर तिलक शोभा देता है। हाय! हाय! ऐसा बयान करते समय मैं कैसे जिन्दा रही? मुझे परमधाम की जरा भी सुध नहीं रह गई?

बरनन किया श्रवन का, जाके ताबे दिल हुकम।
मासूक अंग बरनवते, हाए हाए मोमिन रहे क्यों हम।। ९१ ।।

मैंने श्री राजजी महाराज के कान अंग का वर्णन किया है, जिसके अधीन श्री राजजी महाराज का दिल और हुकम रहता है। माशूक श्री राजजी महाराज के अंगों का वर्णन करते समय हाय! हाय! हम मोमिनों के झूठे तन कैसे रह गए?

कहे गौर गलस्थल हक के, कई छब नाजुक कोमलता।
हाए हाए रूह इत क्यों रही, मुख देख मासूक बका।। ९२ ।।

श्री राजजी महाराज के कण्ठ का रंग मैंने गोरा, नाजुक और कोमल बताया है। इस छवि से श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द को देखकर हाय! हाय! मेरी रूह यहां कैसे खड़ी रही?

Nijanand App

बड़ी रूहें देख्या हक को, हकें देख्या सामी भर नैन।
हाए हाए बात करते जीव क्यों रह्या, एह देख नैन की सैन।।९३।।

श्री श्यामाजी ने श्री राजजी को नजर भरकर देखा और श्री राजजी महाराज ने श्यामा महारानी को नजर भरकर देखा। उनकी नजरों के इशारों को देखकर हाय! हाय! इस शोभा की बात बताते हुए मेरा जीव कैसे रह गया?

भौंह स्याह नैन अनियां कही, और कह्या जोड़ गौर अंग।
हाए हाए ए तन हुकमें क्यों रख्या, हुआ कतल न होते जंग।।९४।।

मैंने श्री राजजी के स्वरूप का वर्णन करते समय भौंहें काली रंग की, नैन नुकीले और अंग को गोरा बताया है, जिनकी किरणें आपस में टकराती हैं। ऐसा वर्णन करते हुए हाय! हाय! मेरे तन को हुकम ने कैसे जिन्दा रखा?

देखी निरमलता दंतन की, न आवे मिसाल लाल मानिक।
ज्यों देखत बीच चसमों, त्यों देखी जाए जुबां मुतलक।।९५।।

मैंने दांतों की निर्मलता को देखा। जिसको लाल माणिक की भी उपमा नहीं लगती। जैसे हम चश्मे में से देखते हैं, वैसी ही श्री राजजी के दांतों में से जबान दिखाई देती है।

कबूं हीरा कबूं मानिक, इन रंग सोभा कई लेत।
दोऊ निरमल ऐनक ज्यों, परे होए सो देखाई देत।।९६।।

यह दांत कभी हीरे के समान सफेद, तो कभी माणिक के समान लाल दिखाई देते हैं, परन्तु दोनों ही ऐनक (शीशे) की तरह दिखाई देते हैं। थोड़ा दूर होकर देखो तो अन्दर की जिह्वा दिखाई देती है।

लालक इन अधुर की, हक कबूं दिलों देखावत।
बंध बंध जुदे होए ना पड़े, मेरा हैड़ा निपट सखत।।९७।।

होंठों की लालिमा श्री राजजी महाराज अपने मोमिनों को कभी-कभी दिखाते हैं। हाय! हाय! मेरा दिल इतना कठोर हो गया और ऐसी शोभा को देखकर इस तन के जोड़-जोड़ अलग क्यों नहीं हो गए?

हक मुख सलूकी क्यों कहूं, छबि सोभित गौर गाल।
बरनन करते ए सूरत, हाए हाए लगी न हैड़े भाल।।९८।।

श्री राजजी महाराज के मुख की सलूकी तथा गोरे गालों की छवि कैसे बताऊं? क्योंकि इस स्वरूप का वर्णन करते समय हाय! हाय! मेरे दिल में भाले के समान चोट क्यों नहीं लगी?

मैं कही जो मुख मांड़नी, और कह्या मुख सलूक।
ए केहेते सलूकी मेरा अंग, हाए हाए हो न गया टूक टूक।।९९।।

मैंने श्री राजजी महाराज के मुख की सुन्दरता और सलूकी बताई है। ऐसी सलूकी का वर्णन करते हुए हाय! हाय! मेरे अंग के टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गए?

कही गौर हरवटी हक की, लांक पर लाल अधुर।
कही दंत जुबां बीड़ी मुख, हाए हाए रूह क्यों रही सुन मधुर।।१००।।

श्री राजजी महाराज की हरवटी गोरी है और हरवटी के ऊपर की लांक (गहराई) तथा उसके ऊपर लाल होंठों की शोभा है। उस पर दांतों की, जबान की तथा पान बीड़ा की हकीकत बताई है। हाय! हाय! यह सुनकर मेरी रूह क्यों खड़ी है?

Nijanand App

लाल अधुर कहे मासूक के, सो दिलें भी देखी लालक।
ए देख लोहू मेरा क्यों रह्या, सूक न गया माहें पलक।। १०१ ।।

मैंने श्री राजजी महाराज के होंठ लाल बताए हैं। मेरे दिल ने उस लालिमा को देखा है। मेरे तन का खून एक पल में ही सूख क्यों नहीं गया?

कंठ खभे बंध बंध का, नख सिख किया बरनन।
हाए हाए जीवरा मेरा क्यों रह्या, टूट्या न अन्तस्करन।। १०२ ।।

मैंने गले का, बाजू का तथा हर अंग के जोड़ों का नख से शिख तक वर्णन किया है। ऐसा वर्णन करते समय मेरे जीव का अन्तःकरण फट क्यों नहीं गया?

बरनन किया बका हक का, मैं हुकम लिया दिल ल्याए।
केहेते हैड़े की सलूकी, हाए हाए मेरी छाती न गई चिराए।। १०३ ।।

मैंने श्री राजजी महाराज के हुकम को सिर चढ़ाकर उनके अखण्ड स्वरूप का वर्णन किया है। उनकी छाती की सलूकी का वर्णन करते समय हाय! हाय! मेरी छाती क्यों नहीं फट गई?

हकें अर्स किया दिल मोमिन, ए मता आया हक दिल से।
हकें दिल दिया किया लिख्या, हाए हाए मोमिन डूब न मुए इनमें।। १०४ ।।

मोमिन के दिल को श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श किया। अपना दिल देकर मोमिनों के दिल को अर्श किया है, लिखा है। यह सब जानकारी श्री राजजी महाराज के दिल से ही संसार में आई है। हाय! हाय! मोमिन फिर भी ऐसा वर्णन सुनकर डूबकर मर क्यों नहीं गए?

हार कहे हैड़े पर, जोत भरी जिमी आसमान।
हाए हाए ए मुरदा जल ना गया, नूर एता होते सुभान।। १०५ ।।

मैंने श्री राजजी महाराज की छाती पर हारों की शोभा बताई है, जिनकी किरणें जमीन और आसमान में फैली हैं। श्री राजजी महाराज के ऐसे सुन्दर नूर के सामने यह मेरा मुर्दा तन जल क्यों नहीं गया?

कटि पेट पांसे कहे हक के, ले दिल के बीच नजर।
हाए हाए ख्वाबी तन क्यों रह्या, ए दिल को लेकर।। १०६ ।।

मैंने अपनी आत्मदृष्टि से श्री राजजी महाराज के पेट, कमर, पसलियां बताई हैं। ऐसे श्री राजजी महाराज की शोभा को दिल में लेकर हाय! हाय! यह झूठा तन कैसे खड़ा है?

कांध पीठ लीक सलूकी, कही इलमें दिल दे।
हाए हाए हुकमें ए तन क्यों रख्या, जो हुकम बैठा हुज्जत रूह ले।। १०७ ।।

कन्धे का, पीठ की गहराई का तथा अंग की सलूकी का मैंने जागृत बुद्धि के ज्ञान से वर्णन किया है। हाय! हाय! ऐसा वर्णन करते समय यह मेरा तन क्यों खड़ा रहा? यह श्री राजजी का हुकम मेरी रूह को क्यों पकड़ कर बैठा है?

अर्स जवेर की क्यों कहुं, देखे बाजू बंध के नंग।
जिमी से आसमान लग, हाए हाए जीव कतल न हुआ देख जंग।। १०८ ।।

परमधाम के बाजूबन्ध के नग, उनकी किरणों की टकराहट जो जमीन से आसमान तक फैली हुई है, उन जवेरों को जो बाजूबन्ध में जड़े हैं, की शोभा को कैसे बताऊं? इस शोभा को देखकर जीव मर क्यों नहीं गया?

Nijanand App

हक हाथों की बरनन करी, मच्छे कोनी कलाई काड़े।
ए सुन जीव क्यों रेहेत है, ले ख्वाब झूठे भांडे।। १०९ ।।

मैंने श्री राजजी महाराज के हाथों का काड़ा, कलाई, कोहनी और मच्छों का वर्णन किया है, जिसे सुनकर भी यह जीव झूठे सपने के तन को लेकर क्यों खड़ा है?

पोहोंचे लीकें हथेलियां, छबि अंगुरियां नख तेज।
देखो अचरज मुख केहेते, हो न गया रेजा रेज।। ११० ।।

पोहोंचों का, हाथों की रेखाओं का, उंगलियों की सुन्दरता का तथा नाखून के तेज का मैंने वर्णन किया है। बड़ी हैरानी की बात है कि ऐसा वर्णन करते समय मेरा अंग टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गया?

रंग सलूकी भूखन, देख काड़े हाथों के।
ए जोत ले जीव ना उड़या, हाए हाए बड़ा अचम्भा ए।। १११ ।।

आभूषणों की सलूकी (सुघड़ता) और रंग तथा हाथों की कलाई देखकर हाय! हाय! यह जीव क्यों नहीं उड़ा? यही बड़ी हैरानी की बात है।

कई रंग इजार मासूक की, दावन में झांई लेत।
छेड़े पटुके दावन पर, हाए हाए दिल अजूं न घाव देत।। ११२ ।।

श्री राजजी महाराज के कई रंग जामे के घेरे में झलकते दिखाई देते हैं। पटुके के किनारे जामे के दामन पर आए हैं। हाय! हाय! इसका विचारकर दिल में घाव क्यों नहीं लगता?

चरन कमल मासूक के, चित्त में चुभें जिन।
ए छबि सलूकी भूखन, क्यों कर छोड़ें मोमिन।। ११३ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल जिसके चित्त में चुभ गए हैं, उन चरणों की सलूकी और छबि मोमिन कैसे छोड़ दें?

ए चरन आवें जिन दिल में, सो दिल अर्स मुतलक।
कई मुतलक बातें अर्स की, दिल सब विध हुआ बेसक।। ११४ ।।

यह चरण कमल जिसके दिल में आ गए, निश्चित है कि श्री राजजी महाराज उसके दिल में बैठे हैं। फिर निश्चित है कि परमधाम की सब गुझ (गुप्त) बातें उसे अपने आप पता लग जाएंगी और सब प्रकार के संशय मिट जाएंगे।

क्यों कहूं खूबी चरन की, और खूबी भूखन।
अदभुत सोभा हक की, क्यों न होए अर्स तन।। ११५ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों की तथा आभूषणों की खूबी कैसे बताऊं? इन चरणों की अद्‌भुत शोभा मोमिन की परआतम (अर्श तन) में क्यों नहीं होगी?

चकलाई इन चरन की, भूखन छबि अनूपम।
दिल ताही के आवसी, जाको मुतलक मेहेर खसम।। ११६ ।।

चरण कमलों की सुन्दरता और आभूषणों की बेमिसाल छबि उसी के दिल में आएगी, जिसके ऊपर धनी की मेहर होगी।

Nijanand App

जो होवे अरवा अर्स की, सो इन कदम तले बसत।
सराब चढ़े दिल आवत, सो रूह निस दिन रहे अलमस्त।। ११७ ।।

जो परमधाम की रूहें होंगी वह श्री राजजी के चरणों के तले ही रहती हैं। जब उनके दिल में चरण याद आ जाते हैं, तो रूहें रात-दिन इश्क की शराब की मस्ती में अलमस्त हो जाती हैं।

निमख न छोड़े चरन को, मोमिन रूह जो कोए।
निस दिन रहे खुमार में, आवत है चरन बोए।। ११८ ।।

इसलिए जो भी रूहें (आशिक मोमिन) हैं, वह श्री राजजी महाराज के चरणों को एक पल के लिए भी नहीं छोड़तीं। वह रात-दिन इन चरणों के चितवन के नशे में रहती हैं और चरणों की लज्जत भी उन्हीं को मिलती है।

मासूक के चरनों का, किया बेवरा बरनन।
जीव उड़या चाहिए केहेते लीक, हाए हाए क्यों रहे मोमिन तन।। ११९ ।।

माशूक श्री राजजी महाराज के चरणों का वर्णन मैंने किया है, जिनके चरणों की तली की रेखाओं का वर्णन करते जीव उड़ जाना चाहिए। हाय! हाय! यह मोमिन तन कैसे लेकर खड़े हैं?

हाथ पांउं मुख हैयड़ा, वस्तर भूखन हक सूरत।
ए ले ले अर्स बारीकियां, हाए हाए रूह क्यों न जागत।। १२० ।।

श्री राजजी महाराज के हाथ की, पैर की, मुख की, छाती की, वस्त्रों, आभूषणों की और श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की खास बातें देखकर भी हाय! हाय! यह मोमिन क्यों नहीं जागते?

जो जोत कहूं अंग नंग की, देऊं निमूना नरम पसम।
ए तो अर्स पत्थर या जानवर, सो क्यों पोहोंचे परआतम।। १२१ ।।

मैंने श्री राजजी महाराज के अंगों के नगों की जोत बताई है और नरमाई में उपमा पश्म की बताई है। संसार के पत्थर या जानवरों की उपमा परमधाम की अखण्ड परआतम को कैसे दी जाए?

जो परआतम पोहोंचे नहीं, सो क्यों पोहोंचे हक अंग को।
खेलौने और खावंद, बड़ो तफावत इन मों।। १२२ ।।

जो उपमा रूहों की परआतम को नहीं दी जा सकती, तो वह श्री राजजी महाराज के अंग को कैसे दी जाए? श्री राजजी महाराज के तन और संसार के तनों में खिलौने और खावन्द जैसा फर्क है।

जित आद अन्त न पाइए, तित तेहेकीक होए क्यों कर।
इत सब्द फना का क्या कहे, जित पाइए न अव्वल आखिर।।। १२३ ।।

परमधाम में जहां आदि नहीं है और अन्त भी नहीं है, वहां इस फर्क का निर्णय कैसे हो? इस झूठे संसार के शब्दों से कैसे वर्णन करूं?

ए निरने करना अर्स का, तिन में भी हक जात।
इत नूर अकल भी क्या करे, जित लदुन्नी गोते खात।। १२४ ।।

संसार में बैठकर परमधाम का निश्चित रूप से वर्णन करना कठिन है और उस पर भी हकजात ब्रह्मसृष्टियों के बारे में निर्णय करना अति कठिन है, जिसका वर्णन अक्षरब्रह्म की बुद्धि कैसे करेगी, जिन मोमिनों की हकीकत का वर्णन करने में स्वयं श्री राजजी महाराज की जबान लड़खड़ाती है (क्योंकि आशिक माशूक की शोभा का वर्णन कभी कर ही नहीं सकता)।

Nijanand App

जवेर पैदा जिमीय से, सो भी नहीं कह्या अर्स में।
चौदे तबक उड़ावे अर्स कंकरी, इत भी बोलना नहीं ताथें।। १२५ ।।

जवेर (जवाहरात) संसार में जमीन से निकलते हैं। परमधाम में ऐसा नहीं होता। वह अंग की ही शोभा हैं। परमधाम की एक कंकरी यहां के चौदह लोक के ब्रह्माण्ड को उड़ा सकती है, इसलिए संसार की चीजों की उपमा परमधाम के वर्णन करने में नहीं लगती।

जित चीज नई पैदा नहीं, ना कबूं पुरानी होए।
तित सब्द जुबां जो बोलिए, सो ठौर न रही कोए।। १२६ ।।

परमधाम में जहां कोई चीज नई पैदा नहीं होती और कोई चीज पुरानी नहीं होती, वहां के लिए यहां के शब्द और जबान से बोलने का कोई ठिकाना नहीं है, क्योंकि यहां हर चीज मिटने वाली है।

जो कहूं हक दिल माफक, तो इत भी सब्द बंधाए।
ताथें अर्स बारीकियां, सो किसी विध कही न जाए।। १२७ ।।

यदि मैं यहां श्री राजजी महाराज के दिल के अनुसार भी कुछ कहती हूं, तो मेरे यह शब्द भी निराकार के आगे नहीं जाते, इसलिए परमधाम की बारीक बातों का वर्णन किसी तरह भी नहीं किया जा सकता।

चुप किए भी ना बने, हुकम इलम आया इत।
और काम इनको नहीं, जो अर्स अरवा लई हुज्जत।। १२८ ।।

चुप रहकर भी नहीं चलता, क्योंकि श्री राजजी का हुकम और इलम आया है, जिन्होंने रूहों के नाम का दावा ले रखा है, इसलिए हुकम और इलम को वर्णन करने के सिवाय दूसरा काम नहीं है।

इलम कह्या जो लदुन्नी, सो तो हक का मुतलक।
इत मोमिन मिल पूछसी, क्यों रही रूहों को सक।। १२९ ।।

जिसको इलम-ए-लदुन्नी कहा है, बेशक वह श्री राजजी महाराज ने अपने मुखारबिन्द से कहा है। इस संसार में मोमिन मिलकर पूछ सकते हैं कि ऐसा बेशक इलम मिलने पर भी रूहों को संशय कैसे रह गया?

जो अर्स बातें सक हमको, तो हकें क्यों कह्या अर्स कलूब।
मोमिन कहे बीच वाहेदत, इन आसिकों हक मेहेबूब।। १३० ।।

अर्श की वाणी में यदि मोमिनों को ही शक है, तो उनके दिल को श्री राजजी महाराज अपना अर्श क्यों कहते हैं? परमधाम में जहां एकदिली है, वहां के आशिक मोमिन ही श्री राजजी को अपना महबूब कह सकते हैं।

मेहेबूब आसिक एक कहें, वाहेदत भी एक केहेलाए।
अर्स भी दिल मोमिन कह्या, ए तो मिली तीनों विध आए।। १३१ ।।

आशिक मोमिन, महबूब श्री राजजी महाराज दोनों एक बतलाए हैं, इसलिए तो इनको वाहेदत कहते हैं। मोमिनों के दिल को भी अर्श कहा है, तो इस तरह से मोमिनों के संसार के तन, परमधाम की परआतम तथा श्री राजजी महाराज यह तीनों एक हैं।

Nijanand App

और भी कहूं सो सुनो, मोमिन अर्स से आए उतर।
इलम दिया हकें अपना, अब इनों जुदे कहिए क्यों कर।। १३२ ।।

और भी कुछ कहती हूं। मोमिन परमधाम से खेल में उतरकर आए हैं और श्री राजजी महाराज ने इन्हें अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया है, इसलिए अब इनको अलग कैसे माना जाए?

फुरमान आया इनों पर, अहमद इनों सिरदार।
हक बिना कछुए ना रखें, इनों दुनियां करी मुरदार।। १३३ ।।

कुरान मोमिनों के वास्ते आया। श्री श्यामा महारानी इनके सुभान हैं। वह भी मोमिनों के वास्ते आए हैं और मोमिनों ने श्री राजजी महाराज के सिवाय दुनियां को मुरदार समझकर छोड़ दिया है।

ए सब बुजरकी इनों की, क्यों जुदे कहिए वाहेदत।
इने कुन्नकी दुनी क्या जानही, रूहें अर्स हक निसबत।। १३४ ।।

यह सारी महिमा मोमिनों की है, जो श्री राजजी महाराज की अंगनाएं हैं। इनको अलग कैसे कहा जाए? कुन शब्द कहने से पैदा हुई दुनियां वाले इस रहस्य को कैसे जानेंगे कि परमधाम में रूहें श्री राजजी महाराज की अंगना हैं?

तिन से अर्स मता क्यों छिपा रहे, जो दिल अर्स कह्या मोमिन।
एक जरा न छिपे इन से, ए देखो फुरमान वचन।। १३५ ।।

जिन मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है, उनसे परमधाम की कोई भी हकीकत रंचमात्र भी छिपी नहीं रह सकती। यह कुरान में स्पष्ट लिखा है।

बका पट किने न खोलिया, अव्वल से आज दिन।
हाए हाए तन न हुआ टुकड़े, करते जाहेर ए वतन।। १३६ ।।

शुरू से आज दिन तक परमधाम की पहचान किसी ने नहीं बताई। अपने घर की बातें जाहिर करते समय हाय! हाय! मेरे तन के टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गए?

अर्स बका द्वार खोल के, करी जाहेर हक सूरत।
अंग मेरा रह्या अचरजें, द्वार खोलते वाहेदत।। १३७ ।।

अखण्ड परमधाम के दरवाजे खोलकर मैंने श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन किया। इस अखण्ड घर के मूल-मिलावा की पहचान कराते समय बड़ी हैरानी होती है कि मेरा यह तन संसार में खड़ा कैसे है?

मेरी रूहे कह्या आगे रूहन, सुन्या मैं हक के मुख इलम।
ए बात केहेतें तन ना फट्या, हाए हाए ए देख्या बड़ा जुलम।। १३८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने रूहों के सामने कहा है कि यह जागृत बुद्धि का ज्ञान मैंने श्री राजजी से सुना है। यह बात कहते हुए मेरे तन के टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गए? यही बहुत बड़ी हैरानी है।

यों चाहिए मोमिन को, रूह उड़े सुनते हक नाम।
बेसक अर्स से होए के, क्यों खाए पिए करे आराम।। १३९ ।।

मोमिनों को श्री राजजी महाराज का नाम सुनते ही शरीर छोड़ देना चाहिए। परमधाम के सभी संशय मिट जाने पर भी इस संसार में कैसे खा, पी रहे हैं और कैसे चैन से रह रहे हैं?

Nijanand App

हक अर्स याद आवते, रूह उड़ न पोहोंचे खिलवत।
बेसक होए पीछे रहे, हाए हाए कैसी ए निसबत।। १४० ।।

परमधाम और श्री राजजी की याद आंते ही रूह को तन छोड़कर मूल-मिलावे में पहुंच जाना चाहिए। अब निःसंदेह होने पर भी संसार में कैसे बैठे हैं?

क्यों न खेलावें खिलवत में, रूह अपनी रात दिन।
हक इलमें अजूं जागी नहीं, कहावें अर्स अरवा तन।। १४१ ।।

परमधाम और श्री राजजी की पहचान होने के बाद भी रात-दिन मूल-मिलावा के सुख क्यों नहीं लेते? इससे मालूम होता है कि रूहें जागृत बुद्धि की वाणी से अभी जागी नहीं हैं, जबकि अर्श की अरवाह श्री राजजी की अंगना कही जाती है।

बैठ इन ख्वाब जिमीय में, कहे अर्स अजीम का बातन।
हड्डी हड्डी जुदी होए ना पड़ी, तो कैसी रूह मोमिन।। १४२ ।।

इस झूठे संसार में बैठकर परमधाम के छिपे रहस्यों को बताया है। ऐसा वर्णन करते समय मेरी हड्डी-हड्डी अलग क्यों नहीं हो गई? हम कैसे मोमिन हैं!

याद न जेता हक अर्स, एही मोमिनों बड़ा कुफर।
हक वाहेदत इलम चीन्ह के, अजूं क्यों देखे दुनी नजर।। १४३ ।।

मोमिनों को श्री राजजी महाराज और परमधाम की याद जितने समय तक नहीं आती, उतना ही उनके अन्दर कुफ्र है, माया है। वरना श्री राजजी महाराज के मूल-मिलावा की जागृत बुद्धि के ज्ञान से पहचान हो जाने पर अभी भी मोमिनों की चाहना दुनियां की क्यों है?

सुनते नाम हक अर्स का, तबहीं अरवा उड़ जात।
हाए हाए ए बल देख्या हुकम का, अजूं एही करावे बात।। १४४ ।।

श्री राजजी महाराज और परमधाम का नाम सुनकर मोमिनों की अरवाह तुरन्त संसार से छूट जानी चाहिए। हाय! हाय! यह हुकम की शक्ति है, जो फिर भी हमारे तन को संसार में रखे है।

वस्तर और भूखन कहे, हक अंग वाहेदत के।
ए केहेते बारीकियां अर्स की, हाए हाए तन उड़या न ख्वाबी ए।। १४५ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग मोमिनों के वस्त्र और आभूषणों का मैंने वर्णन किया है। परमधाम की ऐसी बारीक बातें (खास बातें) कहते हुए हाय! हाय! यह झूठा तन क्यों नहीं उड़ गया?

बेसक इलम ले दिल में, बरनन किया बेसक।
हुए बेसक रूह ना उड़ी, हाए हाए पोहोंची ना खिलवत हक।। १४६ ।।

श्री राजजी महाराज का बेशक इलम दिल में लेकर श्री राजजी महाराज के स्वरूप का भी निस्संदेह वर्णन किया। रूह के संशय न रहने पर वह संसार को छोड़कर श्री राजजी के सामने मूल-मिलावे में क्यों नहीं पहुंच जाती?

Nijanand App

कहे इलम रूहें इत हैं नहीं, है हुकम तो हक का।
हुए बेसक हुकम क्यों रहे, ले हुज्जत रूह बका।। १४७ ।।

जागृत बुद्धि का ज्ञान यह बतलाता है कि रूहें खेल में आई नहीं हैं। यहां श्री राजजी महाराज का हुकम ही उनके नाम का तन धारण किए है। तारतम ज्ञान से फिर संशय रहित होने पर हुकम भी हमारी रूह के नाम से संसार में क्यों रहे? अखण्ड घर क्यों नहीं चला जाता?

बेसक हुए जो अर्स से, और बेसक हुए वाहेदत।
मुतलक इलम पाए के, हाए हाए हुकम क्यों रह्या ले हुज्जत।। १४८ ।।

मोमिन परमधाम और अपने अंगना होने की एकदिली से निस्संदेह हो गए हैं। उन्हें जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी मिल गई है, तो हाय! हाय! हुकम हमारे नाम का दावा लेकर संसार में कैसे खड़ा है?

नैन रहे नैन देख के, एही बड़ा जुलम।
न जानो क्यों सुरखरु, करसी हक हुकम।। १४९ ।।

श्री राजजी महाराज के नैनों को रूह के नैन देखकर खड़े रहे, यही बड़ी हैरानी है। पता नहीं श्री राजजी महाराज का हुकम रूहों को श्री राजजी के सामने खड़े होने के योग्य कैसे बनाएगा?

ए विरहा सुन श्रवन रहे, लगी न सीखां कान।
हाए हाए वजूद न गल गया, सुन विरहा हादी सुभान।। १५० ।।

श्री राजजी महाराज के बिछुड़ने की बात सुनकर यह कान कैसे खड़े रहे? इनको गरम-गरम सलाखें क्यों नहीं लगी? श्री राजश्यामाजी के बिछुड़ने की बात सुनकर हाय! हाय! यह संसार का तन गल क्यों नहीं गया?

संध संध टूटी नहीं, सुनते विरहा सुकन।
रोम रोम इन तन के, क्यों न लगी अगिन।। १५१ ।।

श्री राजजी महाराज के विरह के वचन सुनकर अंग के जोड़-जोड़ क्यों नहीं खुल गए तथा इस सांसारिक तन के रोम-रोम में आग क्यों नहीं लग गई?

बातें इन विरह की, मैं गाई अंग अंग कर।
अचरज इन निसबतें, अरवा ना गई जर बर।। १५२ ।।

श्री राजजी महाराज के बिछुड़ने की बातों को मैंने उनके अंग-अंग का वर्णन करके गाया। बड़ी हैरानी वाली बात है कि अंगना होने पर भी मेरी रूह जल-बल क्यों नहीं गई?

मेरे अंग सबे उड़ ना गए, सब देख हक के अंग।
सेज सुरंगी हक छोड़ के, रही पकड़ मुरदे का संग।। १५३ ।।

श्री राजजी महाराज के अंगों को देखने पर मेरे यह संसार के तन के अंग समाप्त क्यों नहीं हो गए? श्री राजजी महाराज की सुन्दर सेज का सुख छोड़कर यह मिटने वाले तन को क्यों पकड़े रही?

क्यों न उड़ी अकल अंग थें, जो बरनन किया अर्स हक।
ए पूरी हांसी बीच अर्स के, माहें गिरो आसिक।। १५४ ।।

श्री राजजी महाराज और परमधाम का मैंने वर्णन किया, तो मेरे अंग की अक्ल क्यों नहीं समाप्त हो गई? इसकी हंसी परमधाम में सब रूहों के बीच होगी।

Nijanand App

करी हांसी हकें हम पर, ता विधसों चले न किन।
अब सो क्योंए न बनि आवहीं, जो रोऊं पछताऊं रात दिन।। १५५ ।।

श्री राजजी महाराज ने हमारे ऊपर हंसी की है। जैसा हमने दावा भरा था, उसके अनुसार हममें से कोई भी नहीं चल सका। अब रात-दिन रोती हूं, पछताती हूं, परन्तु बिगड़ी बात किसी तरह से नहीं बनती।

सोई देखी जो कछू देखाई, अब देखसी जो देखाओगे।
हंसो खेलो जानों त्यों करो, बीच अर्स खिलवत के।। १५६ ।।

श्री राजजी महाराज! आपने जो खेल हमको दिखलाया वह देखा और आगे भी जो दिखाओगे सो देखूंगी। श्री राजजी महाराज! हंसो, खेलो, जैसा चाहो वैसा करो, परन्तु यह सब परमधाम मूल-मिलावे के अन्दर ही करो।

मोमिन दिल अर्स कर के, आए बैठे दिल माहें।
खुदी रूहों इत ना रही, इत गुनाह मोमिनों सिर नाहें।। १५७ ।।

मोमिनों के दिल को अर्श कर श्री राजजी महाराज इनके दिलों में आकर बैठ गए हैं, इसलिए अब मोमिनों का अहंभाव खत्म हो गया, इसलिए अब मोमिनों पर कोई गुनाह नहीं बनता।

फेर हिसाब कर जो देखिए, तो गुनाह रूहों आवत।
ए बेवरा है कलस में, मोमिन लेसी देख तित।। १५८ ।।

दुबारा विचार करके देखें तो गुनाह रूहों के सिर ही आता है। मोमिनों के सिर गुनाह किस तरह से आता है, इसका विवरण 'कलस' किताब में कहा। वहां से देख लेंगे।

रूहें मोमिन इत आई नहीं, तिन वास्ते नहीं गुना।
पर एता गुनाह लगत है, इनों में जेता हिस्सा अर्स का।। १५९ ।।

रूह मोमिन खेल में आए ही नहीं, इसलिए कोई गुनाह नहीं है। उनको उतना गुनाह फिर भी लगता है, जितना परमधाम का अंश उनके अन्दर है (अर्थात् उनका नाम तो है)।

महामत कहे मोमिनों पर, करी हांसी हुकमें।
ना तो अरवाहें इत क्यों रहें, बेसक होए हक सें।। १६० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के हुकम ने हमारे पर हंसी करने के वास्ते ही हमारी ऐसी हालत कर दी है कि संसार में निस्संदेह होने पर भी हम यहां पर ही खड़े हैं।

॥ प्रकरण ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ १६०६ ॥

मोमिन दुनीका बेवरा

अरवा आसिक जो अर्स की, ताके हिरदे हक सूरत।
निमख न न्यारी हो सके, मेहेबूब की मूरत।। १ ।।

जो परमधाम की आशिक रूहें हैं, उनके दिल में श्री राजजी महाराज विराजमान हैं, इसलिए श्री राजजी महाराज का स्वरूप उनके हृदय में से एक क्षण के लिए भी अलग नहीं हो सकता।

Nijanand App